

---

# Shrikrishna Dhyani

श्रीकृष्णध्यानानि

## Document Information

---

Text title : Shrikrishna Dhyani

File name : shrIkRRiShNadhyAnAni.itx

Category : vishhnu, krishna, dhyAna

Location : doc\_vishhnu

Transliterated by : Vishwesh GM

Proofread by : Vishwesh GM

Latest update : September 28, 2022

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

September 28, 2022

*sanskritdocuments.org*

---

---

## Shrikrishna Dhyani

---

### श्रीकृष्णध्यानानि

---



श्रीकृष्णस्य प्रातः मध्याह्न सायं कालीन ध्यानानि  
श्रीगणेशाय नमः ।

### श्रीकृष्ण का प्रातःकालीन ध्यान

समुद्धूसरोरःस्थलेधेनुधूल्या

सुपुष्टाङ्गमष्टापदाकल्पदीप्तम् ।

कटीरस्थले यारु जङ्घान्तयुग्मं

पिनद्धं क्वणत् किङ्किणीजालदाम्ना ॥ १ ॥

उसन्तं उसत् बन्धुं श्रुत् प्रसून

प्रभापाणि पादाभ्युज्जोदार कान्त्या ।

ध्यानं करे दक्षिणे पायसान्नं

सुडैयङ्गवीनं तथा वाम उस्ते ॥ २ ॥

लसत् गोपगोपी गवां वृन्दमध्ये

सितं वास वाधैः सुरैरर्थिताङ्घ्रिम् ।

महीभार भूता मराराति यूथां

स्ततः पूतनादीन् निहन्तुं प्रवृत्तम् ॥ ३ ॥ (नारदपुराण ८०-७५-८०)

अर्थ-(अेक सुन्दर उद्यान से घिरी हुई सुवर्णमयी भूमिपर रत्नमय मण्डप बना हुआ है । वहाँपर शोभायमान कल्पवृक्ष के नीचे स्थित रत्ननिर्मित कमलयुक्त पीठपर अेक सुन्दर शिशु विराजमान हैं, जिनकी अङ्गकान्ति छन्द्रीलमणि के समान श्याम है । उनके कालेकाले घुंघरावे चिकने केश हैं, उनके दोनों गाल खिलते हुए स्वर्णमय कुण्डलों से अत्यन्त सुन्दर लगते हैं, उनकी नासिका बङ्ी सुधर है, उस सुन्दर बालक के मुभारविन्दपर मन्द मुस्कान की अद्भुत छटा छिटक रही है । वह सोने के तारों में गुंथा और सोने से ढी मढा हुआ सुन्दर वधनभा, धारण करते हैं, जिसमें परम उज्ज्वल चमकीले रत्न जङ्े लुके हैं । गोधूलि से धूसरित वक्षः स्थल में धारण किंये लुके स्वर्णमय आभूषणों से उसकी दीप्ति बहुत बढी हुई है, उनका अेक-अेक अंग अत्यन्त पुष्ट है, 'उनकी दोनों पिण्डलियों का अन्तिम भाग अत्यन्त मनोहर है । उसने अपने कटिभाग से धुंधरुदार करधनी की

वसुंी बांध रक्ष्मी है' जिससे सुमधुर ज्ञकार होती रहती है, जिले डुअे (दुपडरिया) के डूल की अरुण प्रभा से युक्त करारविन्द और यरारभिनदों की उदार कान्ति से सुशोभित वड शिशु मन्द-मन्द डंस रहा है । उसने दाडिने डाय में भीर और बायें डाय में तुरन्त का निकाला डुआ माभन ले रक्ष्मा है । ग्वालौ गोप-सुन्दरियों और गौओं की मडडली में स्थित डोकर वड वसुंी शोभा पा रहा है । छन्द आदि देवता उसके यरणों की आराधना करते हैं वड पृथ्वी के भार भूत दैत्य समुदाय पूतना आदि का संडार करने में लगा है ।

डस प्रकार ध्यान करके अेकाग्र चित्त डो भगवान् का पूजन करे, दडी और गुडः का नैवेद्य अर्पण करे, अेक डजार मन्त्र का जप करे । मन्त्र- ॐ क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजन वल्लभाय स्वाडा ।

डसी प्रकार मध्याह्नकाल में नारदादि मुनिगणों और देवताओं से पूजित विशिषु डुपधारी भगवान् श्रीकृष्ण का पूजन करे । मध्याह्नकालीन ध्यान डस प्रकार करे ।

### श्रीकृष्ण का मध्याह्नकालीन ध्यान

वसत् गोपगोपी गवांवृन्दमध्ये

स्थितसान्द्र मेघप्रभं सुन्दराङ्गम् ।

शिभाङ्गीच्छदापीडमञ्जयताक्षं

वसञ्चिह्निकं पूर्णचन्द्राननं च ॥ १ ॥

यवत् कुण्डलोल्लासि गाण्डस्थल श्री

भरं सुन्दरं मन्दडासं सुनासम् ।

सुकार्तस्वराभाभरं दिव्यभूषं

कवाणत् किङ्किणीजालमात्तानुलेपम् ॥ २ ॥

वेणुन्धमन्तं स्वकरेदधानं

सव्येदरयष्टिमुदारवेषम् ।

दक्षे तथैवेप्सितदानदक्षं

ध्यात्वार्ययन्नन्दजमिन्दिरायैः ॥ ३ ॥ (नारदपुराण ८०-८३-८५)

अर्थ-भगवान् श्रीकृष्ण मेघ के समान श्याम तथा नीलमणि के तुल्य सुन्दर अङ्ग शोभा से युक्त हैं, शिर पर मोर मुकुट धारण डिअे हैं, कमल के सदृश नेत्र सुशोभित डो रहे हैं, गो गोपी और गोपों के मध्य में सुशोभित हैं, उनका भुभ कमल के समान चिकना और पूर्णचन्द्र के समान सुन्दर है । भौंओं का मध्यभाग शोभायुक्त है, उनके कानों में मकराकृत कमनीय कुण्डलों से कपोलों की शोभा राशि डो धारण करते हैं, सुन्दर नासिका है, सुन्दर डारस्थ डंस रहे हैं, तपाये डुअे सोने के सामान पीला पीताम्बर धारण डिअे हैं, पैरों में धुंधरु धारण डिअे है, बजाते डुअे यवते हैं । अङ्ग-अङ्ग में अनुलेपन डिअा है, दाडिने डाय में वंशी लेकर बजा रहे हैं, बायें डाय में छःी लिअे हैं,

अत्यन्त मनोहर वेष है, दाढ़िने छाथ से लक्ष्मी को मनोवाञ्छित वस्तुओं को प्रदान करते हैं । लक्ष्मीपति भगवान् नन्दनन्दन श्रीकृष्ण का ध्यान करके पूजा करें ।

### श्रीकृष्ण का सायं कालीन ध्यान

सायं द्वारवत्यां तु यित्रोधानोपशोभिते ।  
 द्रयष्टसाहस्रसङ्ख्यातैः भवनैरुपमण्डिते ॥ १ ॥

उंससारससङ्कीर्णं कमलोत्पलशालिभिः ।  
 सरोभिर्निर्मलाम्भोभिः पशते भवनोत्तमे ॥ २ ॥

उद्यत्प्रद्योतनोद्योत द्युतौ श्रीमण्डिमण्डपे ।  
 उमाभोजसमासीनं कृष्णं त्रैलोक्य मोहनम् ॥ ३ ॥

तेभ्यो मुनिभ्यः स्वन्धाम दिशन्तं परमक्षरम् ।  
 मुनिवृन्दैः परिवृतमात्मतत्त्व विनिर्णये ॥ ४ ॥

उन्निन्द्रेन्दिवर श्यामं पद्मपत्रायतेक्षणम् ।  
 स्निग्धकुन्तल सम्भिन्न किरीटवनमालिनम् ॥ ५ ॥

यादुप्रसन्नवदनं स्फुरन्मकरकुण्डलम् ।  
 श्रीवत्सवक्षसंभ्राजत्कौस्तुभ सुमनोहरम् ॥ ६ ॥

काश्मीरकपिशोरस्कंपीतकौशेयवाससम् ।  
 डारकेयूरकटकटि सूत्रैरलङ्कृतम् ॥ ७ ॥

दृत्विश्रम्भराभूरि भारमुदितमानसम् ।  
 शङ्भयङ्गदापद्म राज्जम्बुजयतुष्टयम् ॥ ८ ॥ (नारदपुराण ५०-८०-८२)

अर्थ-ठस प्रकार सायं काल में भगवान् श्रीकृष्ण द्वारिकापुरी में एक सुन्दर भवन के भीतर विराजमान हैं । वड श्रेष्ठ भवन सोलह उज्जर गृहों से अलङ्कृत हैं । उसके चारोंओर निर्मल जल वाले सरोवर सुशोभित हैं । उंस सारस आदि पक्षियों से व्याप्त कमल और उत्पल आदि पुष्प उन सरोवरों की शोभा बढाते हैं उक्त भवनों में एक शोभा सम्पन्न मण्डिमण्डप है । जो उदय कालीन सूर्यदेव के समान अरुण प्रकाश से प्रकाशित हो रहा है । उस मण्डप के भीतर सुवर्णमय कमल की आकृति का सुन्दर सिंहासन है । जिस पर त्रिभुवनमोहन श्रीकृष्ण बैठे हैं । उनसे आत्मतत्त्व का निर्णय कराने के लिये मुनियों के समुदाय ने उन्हें सब ओर से घेर रखा है । भगवान् श्यामसुन्दर उन मुनियों को अपने अविनाशी परमधाम का उपदेश दे रहे हैं । उनका अङ्गकान्ति विकसित नीलकमल के समान श्याम हैं । दोनों नेत्र प्रकृत्व कमल दल के समान विशाल है । सिर पर स्निग्ध अलकावलयों से संयुक्त सुन्दर किरीट सुशोभित है । गले में वनमाला शोभा पा रही है । प्रसन्न मुष्णरविन्द मनको मोह लेता है, कपोलों पर मकराङ्कित कुण्डल जिलमिला रहे हैं । वक्षस्थल में श्रीवत्सका

बिहू है, वही कौस्तुभमणि अपनी प्रभाविभोररडी है, उनका स्वरूप अत्यन्त मनोहर है, उनका वक्षस्थल केसर के अनुलेपन से सुनहली प्रभा धारण करता है ।

वे रेशमी पीताम्बर पहने हुए हैं विभिन्न अङ्गों में डार, वाजूवंद, कऽः और करघनी आदि आभूषण उन्हें अलङ्कृत कर रहे हैं । उन्होंने पृथ्वी का भारी भार उतार दिया है उनका हृदय परमानन्द से परिपूर्ण है, तथा उनके चारों हाथ शंभ, यक, गदा, और पद्म से सुशोभित है ।


इस प्रकार ध्यान करे और पूजन करे, आवरणों की भी पूजा करे । विधि पूर्वक पूजन करके भीर का भोग लगावे दुग्ध में शक्कर मिश्रित जल को लावितकर तर्पण करे । उसके बाद मूल मन्त्र का १०८ बार जप करे दिन में एकबार डोम करे, तत्पश्चात् स्तुति, नमस्कार, आत्म समर्पण, करे । समर्पण कर पुनः अपने हृदय कमल में स्थापित करे । इस प्रकार प्रतिदिन करने से सम्पूर्ण कामना प्राप्त कर अन्त में परमगति को प्राप्त करता है ।

मूल मन्त्र-


“ॐ कर्ली कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजनवल्लभाय स्वाहा” यह है ।

Encoded and proofread by Vishwesh GM

---

——  
*Shrikrishna Dhyani*

pdf was typeset on September 28, 2022

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

